भूमि : अधिकार और अधिग्रहण के प्रश्न

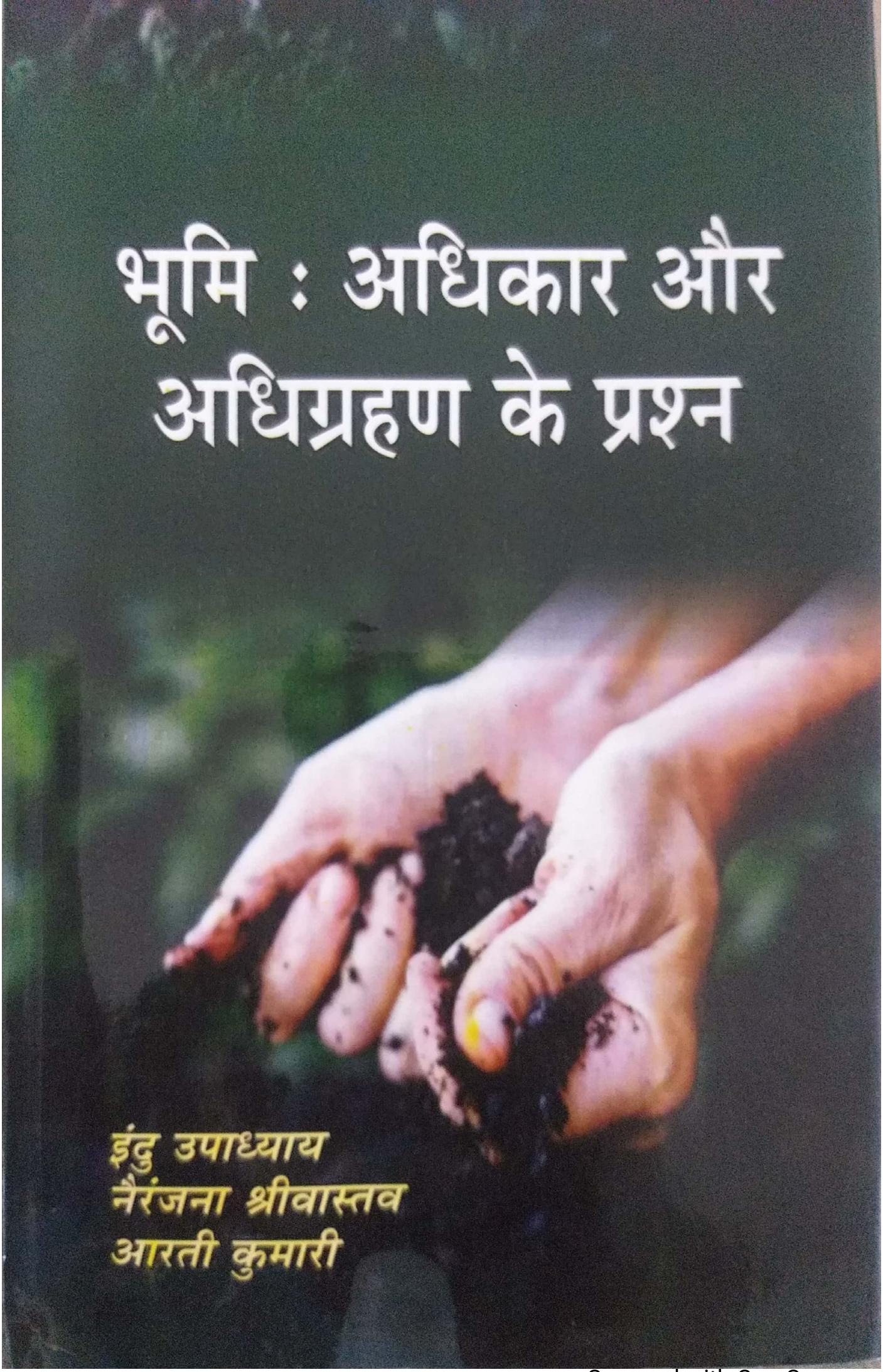

इंदु उपाध्याय
नैरंजना श्रीवास्तव
आरती कुमारी

Scanned with CamScanner

मनीष प्रकाशन

प्लाट नं0-26, रोहित नगर कालोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी

ISBN - 978-93-88007-49-8

ISBN - 978-93-88007-49-8

मूल्य : 525.00 रुपये

Scanned with CamScanner

Issues of Land Acquisition in India

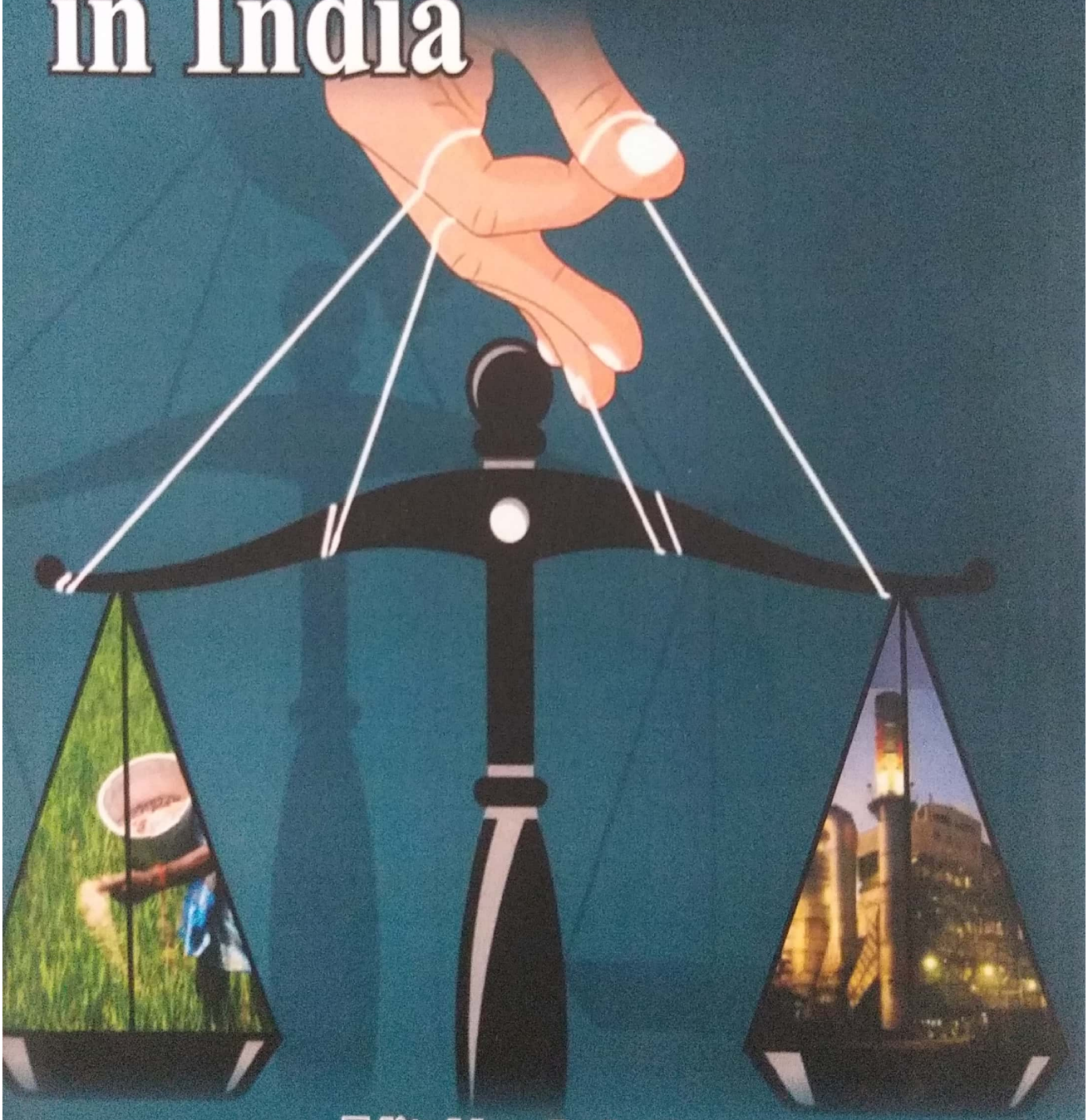

Edited by : Indu Upadhyay
Nairanjana Srivastava
Arti Kumari

Scanned with CamScanner

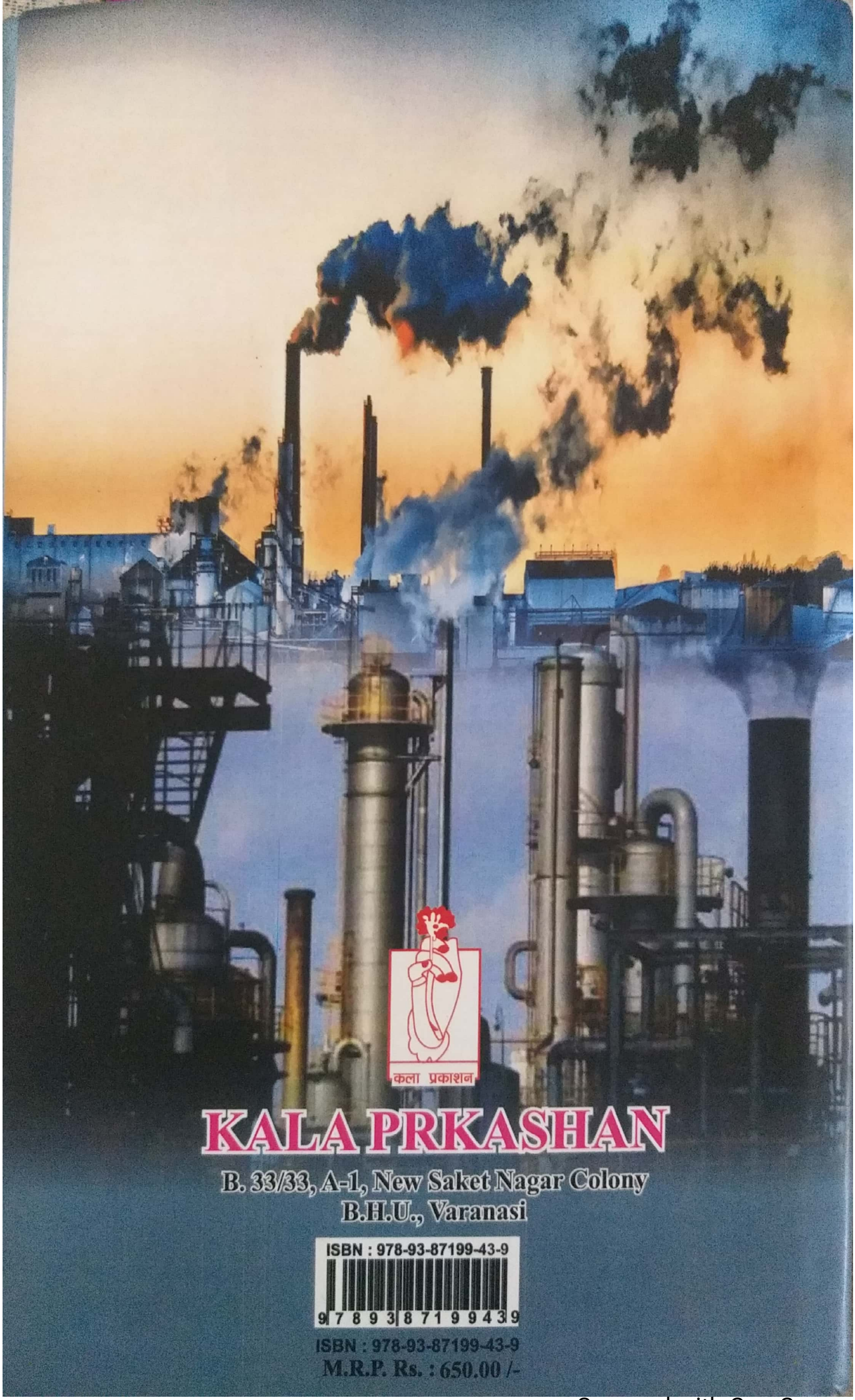

कला प्रकाशन

KALA PRKASHAN

B. 33/33, A-1, New Saket Nagar Colony
B.H.U., Varanasi

ISBN : 978-93-87199-43-9

9 7 8 9 3 8 7 1 9 9 4 3 9

ISBN : 978-93-87199-43-9

M.R.P. Rs. : 650.00 /-

Scanned with CamScanner

भूमि : अधिकार और अधिग्रहण के प्रश्न

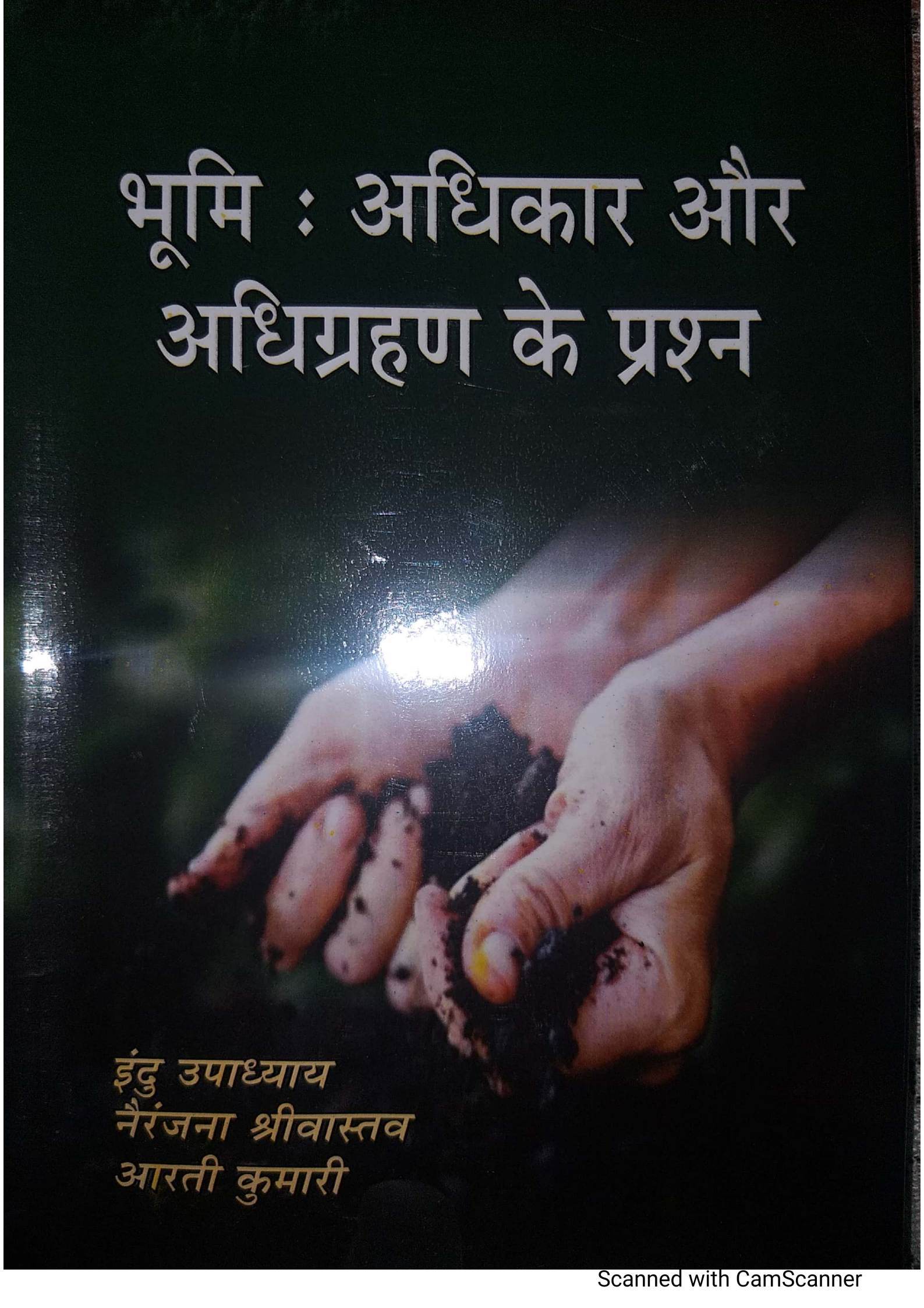

इंदु उपाध्याय
नैरंजना श्रीवास्तव
आरती कुमारी

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

समर्पण	....	iii
संदेश	....	v
आभार	....	vii
प्राक्कथन	....	ix

खंड-1

इतिहास के दर्पण में भूस्वामित्व और अधिग्रहण

1. गुप्तकालीन भूमिदान व्यवस्था : एक अध्ययन 19-27
   कु0 रेखा
2. गहड़वाल राजवंश में भू- अनुदान : एक अभिलेखीय अध्ययन 28-41
   डॉ0 आरती कुमारी
3. आर्थिक विकास एवं भूमि अधिग्रहण अधिनियम 42-48
   डॉ0 अरबिन्द कुमार
4. ब्रिटिश भारत में भूमि अधिग्रहण : भारतीय रेलवे के विशेष संदर्भ में 49-62
   डॉ0 शशिकेश
5. विकास एवं भूमि अधिग्रहण : भारत के सन्दर्भ में 63-70
   डॉ0 पूनम पाण्डेय
6. महिला सशक्तीकरण में भूमि अधिग्रहण अधिनियम की भूमिका 71-74
   डॉ0 प्रतिभा सिंह

Scanned with CamScanner

2

गाहड़वाल राजवंश में भू-अनुदान : एक अभिलेखीय अध्ययन

*डॉ0 आरती कुमारी

गाहड़वाल राजवंश पूर्व मध्ययुगीन भारतीय इतिहास पटल पर अपना चिन्ह अंकित करने में फल रहा। यह राजवंश उत्तर भारत पर उस समय काबिज हुआ जब इस क्षेत्र में राजनीतिक उतार–चढ़ाव का प्रक्रम गतिमान था। गुर्जर–प्रतिहार राजवशं के उपरान्त मध्य गंगा घाटी में उभरकर गाहड़वाल राजवंश सामने आता है। इस राजवंश की नींव चन्द्रदेव ने लगभग 1089 ई0 में रखी जो बारहवीं शती के अन्त तक उद्दीप्तमान रहा है **(दूबे, ए0के0 2011 : 24)**। गाहड़वाल राजवंश का सीमा पश्चिम में उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद से पूर्व में बिहार के पटना जिले तक तथा उत्तर में गोरखपुर जिले से दक्षिण में उत्तर प्रदेश के गंगा यमुना तट तक विस्तृत थी **(दूबे, ए0के0 2011 : 49)**। इनका प्रशासनिक कार्य कन्नौज (प्राचीन कान्यकुब्ज) द्वारा संचालित होता था। इस राजवंश के शासकों द्वारा भारी संख्या में भूमि अनुदानपत्र जारी किये गये। यहाँ यह विचारणीय है कि इस प्रथा का प्रारम्भ भारत में कब और किस रूप में हुआ ? ऐतिहासिक अवलोकन से दृष्टिगत होता है कि राजकीय अनुदानों से जुड़े सबसे प्राचीन अभिलेख जिनमें ऐसे भूमि अनुदानों के राजस्व मुक्त और सर्वविशेषाधिकार युक्त होने की बात कही गयी है, वे पश्चिमी दक्कन के नानेघाट और नासिक क्षेत्र से प्राप्त हुए है। ऐसे भूमि अनुदानों में चौथी शताब्दी ई. के बाद काफी अभिवृद्धि हुई, पाचवीं/छठवीं शताब्दी से सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में शासकों द्वारा इस प्रकार के अनुदान दिये जाने लगे थे। पूर्व मध्यकाल में विशेष रूप से गाहड़वाल राजवंश में भूमि अनुदान व्यापक रूप में किया गया तथा उससे सम्बन्धित ताम्रपत्र निर्गत किये गये। ब्राह्मणों को दिये जाने वाले गाँव को अग्रहार, ब्रह्मदेय या शासन कहा जाता था।

ऋग्वैदिक काल से ही दान या धार्मिक उपहार ब्राह्मणिक विश्वास का हिस्सा रहा है। प्राचीन साहित्य में 'दान' से तात्पर्य अपनी वस्तु का ग्राही को

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी।

Scanned with CamScanner

स्वामी बना देना था। धर्मशास्त्रों में 16 प्रकार के महादानों का उल्लेख मिलता है। **(काणे, पी0वी0 1992 : 248)** जिसमें भूमिदान की अध्यात्मिक महत्ता दर्शायी गई है। प्रारम्भ में इसे धर्म के साथ ही जोड़कर देखा जाता था। धर्मशास्त्र में दान की कुछ विशेष तिथियाँ उल्लिखित हैं जिसमें दान–कर्म अधिक सफल एवं पुण्यप्रद माना जाता है। अयनों (सूर्य के उत्तरायण एवं दक्षिणायन) के प्रथम दिन में षडशीति के प्रारम्भ में में, सूर्य–चन्द्र ग्रहणों के समय, अमावस्या के दिन, तिथिक्षय में, विषुव के दिन (जब रात–दिन बराबर हों) अयन, विषुव, व्यतिपात, दिनक्षय, द्वाद्वशी, संक्रान्ति। इसके अतिरिक्त रविवार, पूर्णिमा का दिन भी दान के लिए उपयुक्त माना गया है **(काणे, पी0वी0 1992 : 453)**। भूमि या ग्राम अनुदानपत्रों में आठ प्रकार की भूमि का वर्णन आया है। यथा– निधि, निक्षेप (भूमि पर जो कुछ दिया गया हो), वारि (जल), अश्मा (प्रस्तर खान), अक्षिणी (वास्तविक विशेषाधिकार), आगामी (भविष्य में होने वाला लाभ), सिद्ध (जो भू– खण्ड कृषि के काम में लिया है) एवं सांध्य (बंजर भूमि जो कभी खेती के काम में आ सकती है)। गाहड़वाल शासकों द्वारा निर्गत अभिलेखों, जिनमें भूमि या ग्राम अनुदान का उल्लेख है, वे निम्नलिखित हैं–

अभिलेख	तिथियाँ	ग्राम / पत्तला
1. चन्द्रावती ताम्रपत्र लेख **(कोनो, एस0 1981 : 302–305)**	वि.सं. 1148 कार्तिक सुदि X	वडग़ वा, वावन पत्तला
2. चन्द्रावती ताम्रपत्र लेख **(साहनी, डी0 1918 :) 192–196**	वि.सं. 1150 आश्विन वदि 15 रविवार	कठेहली पत्तला (साढ़े तैतिस) ग्राम के अतिरिक्त)
3. बंगाल का एशियाटिक सोसायटी ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 9–14)**	1154 माघ सुदि 3 सोये	अहुआम, धणसे रमऊअ पत्तला
4. चन्द्रावती ताम्रपत्र लेख **(साहनी, डी0 1918 : 197–200)**	वि.सं. 1156 वैशाख वदि 3 शनिवार	तीस ग्राम वृहद्देवरठ पत्तला एवं दो ग्राम कठेहली पत्तला
5. मदनपाल बसाही ताम्रपत्र लेख **(फ्लीट, जे0एफ0 1964 : 101–104)**	पौष सुदि 5 (रवि)	वसही, जियावती पत्तला
6. कमौली ताम्रपत्र लेख **(अर्थर, वी0 1892 : 358–361)**	वि.सं. 1162 कार्तिक 5 (15)भउमे (मंगलवार)	उसिथा, जियावती पत्तला पंचालदेश

Scanned with CamScanner

7. बहुवरा ताम्रपत्र लेख **(दूबे, ए0के0 2011 : 3)**	वि.सं. 1163 पौष, अमावस्या सोमदिन (सूर्यग्रहण)	बहुवरा, भैलवट पत्तला
8. बड़ेरा ताम्रपत्र लेख **(वर्मा, टी0पी0 एण्ड ए0के0 सिंह, 2011 : 492–494)**	वि.सं. 1164 वैशाख सुदि 3 गुरु	साजा ग्राम, अरूरेस पत्तला
9. राहन ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 14–19)**	वि.सं. 1166 पौष वदि 15, रवि	चार हल भूमि भाग एक सिर, रामैठा ग्राम सिगुरोढ़, पत्तला
10. गोविन्दचन्द्र का पालि ताम्रपत्र लेख **(वर्मा, टी0पी0 एंड ए0के0 सिंह, 2011 : 499–500)**	वि.सं. 1171 भाद्रपद मास	30 हल भूमि पालिग्राम, सिरसी पत्तला
11. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 101–103)**	वि.सं. 1171 कार्त्तिक सुदि 15	बृहदविराइचमऊआ काठि पत्तला
12. बड़ेरा ताम्रपत्र लेख **(सरकार, डी0सी0 1987 : 176–180)**	वि.सं. 1171 कार्त्तिक सुदि 15 सोम	वढ़वली, कसववण पत्तला
13. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ 1895 : 103–104)**	वि.सं. 1172 वैशाख सुदि 3, सोमवार	धुस, वृहग्रेहयवरठ पत्तला
14. तर्ती ताम्रपत्र लेख **(वर्मा, टी0पी0 एण्ड ए0के0 सिंह, 2011 : 514–117)**	वि.सं. 1173 फाल्गुन वदी 15,	भउमदिन तारम्बी सिंगरौरा, पत्तला
15. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 104–106)**	वि.सं. 1174 आश्विन वदि 15,	बुधे सुणाही, केसौर पत्तला
16. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 106–107)**	वि.सं. 1175 माघ सुदि 15 सोमवार	अछवली, उधणतेरहोत्तर पत्तला
17. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 :109)**	वि.सं. 1176 कार्त्तिक सुदि 9,	बुधवार अमलाब्रह्म ग्राम
18. कमौली ताम्रपत्र लेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 :107–109)**	वि.सं. 1176 ज्येष्ठ वदि 15,	रवि दरवली कोठोटकोटियावरहोत्तर पत्तला
19. दोन बुजुर्ग ताम्रपत्र लेख **(साहनी, डी0 1983 : 2018–224)**	वि.सं. 176 ज्येष्ठ सुदि 8,	सोम कोणावड़ा (पाटक के साथ) अलाप पत्तला
20. बंगाल की एशियाटिक सोसायटी ताम्रपत्र लेख **(वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह, 2011 : 538)**	वि.सं. 1177 कार्त्तिक सुदि 14	करण्डग्राम एवं पत्तला करण्डतल्ला, अन्तराल

Scanned with CamScanner

21. छतरपुर ताम्रपत्र लेख (साहनी, डी0 1983 : 224–226)	वि.सं. 1177 कार्तिक परवणी (रवि)	सारीमऊआ, कोठी पत्तला
22. कमौली ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 109–111)	वि.सं. 1178 श्रावण सुदि 15, शुक्रे	सुलातेनी,नेउलसतावीसिका पत्तला
23. बनारस ताम्रपत्र अभिलेख (वर्मा, टी0पी0 एण्ड ए0के0 सिंह, 2011 : 546–548)	वि.सं. 1181 भाद्रपद सुदि,	गुरु त्रिभाण्डी, यवाल पत्तला
24. गोविन्दचन्द्र का कमौली ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 99–101)	वि.सं. 1182 माघ सुदि, शनि	महयोणमऊआ, हलदोय पत्तला
25. मनेर ताम्रपत्र अभिलेख (वर्मा, टी0पी0 एण्ड ए0के0 सिंह 2011 : 552–555)	वि.सं. 1183 ज्येष्ठ वदि 11	रवि गुणादे एवं पड़ली, मनियार पत्तला
26. बंगाल का एशियाटिक सोसायटी अभिलेख (वर्मा, टी0पी0 एण्ड ए0के0 सिंह, 2011 : 556–558)	वि.सं. 1183 माघ वदि, शुक्र	अगोड़ली, हलदोय पत्तला
27. कमौली ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 68–74)	वि.सं. 1184 कार्तिक सुदि 15,	शुक्र भानी, मड़वत्तल पत्तला
28. भदवड़ा ताम्रपत्र लेख (मेहता, एन0सी0 1983 : 291–294)	वि.सं. 1184 फाल्गुन, अमावस्या,	गुरु भदवड़ा, भटवली के साथ एवं लघु–भदवड़ा, महाविस पत्तला
29. बनारस ताम्रपत्र लेख (वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह 2011 : 566–569)	वि.सं. 1185 चैत्र सुदि 15,	शुक्रे जारगाम, पुरोह पत्तला
30. सहेथ–महेथ ताम्रपत्र लेख (साहनी, डी0 1981 : 20–26)	वि.सं. 1186 आषाढ़ सुदि, 15सोम	विहार, पट्टन्या, उपलौण्डा,ववहली,मेमी–सम्बध–घोषाड़ी, पयासी, पोठिवार – सम्बध–पयासी, वाडांचतुराशिति पत्तला
31. इटौंजा ताम्रपत्र लेख (शास्त्री, एच0 1982 : 295–297)	वि.सं. 1187 मार्गशीर्ष, शुक्रे	कपासी, मंगलजठी पत्तला
32. भदैनी ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1906 : 153–155)	वि.सं. 1187 मार्गशीर्ष मास, रविदिने	पलसौण्डी, नन्दिवार पत्तला

Scanned with CamScanner

33. रैवान ताम्रपत्र लेख (वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह, 2011 : 579–5814)	वि.सं. 1187 मार्गशीर्ष, पूर्णिमा, सोमदिन	सोहजरु भलुरी नवग्राम पत्तला
34. रेन ताम्रपत्र लेख (हार्नले, ए0एफ0आर0 1985 : 249–254	वि.सं. 1188 कार्तिक सुदि, शुक्रे	दश हल (दोसहली ग्राम) सानवत्तल पत्तला
35. पाली ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1959 : 113–115)	वि.सं. 1189, ज्येष्ठ वदि 8, शनि	दश नालुक भूमि गुदुवी ग्राम, गाये र पत्तला, ओणवल पठक
36. भदैनी ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1906 : 155–156)	वि.सं. 1190 वैशाख सुदि 3, शुक्रे	कणौट, नन्दिगी, पत्तला
37. कमौली ताम्रपत्र लेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 111–112)	वि.सं. 1190 भाद्रपद सुदि 3, रवि	उम्बरी, ग्राम, रुदमौआ–वयालिसी पत्तला
38. स्टेट म्यूजियम लखनऊ ताम्रपत्र (सरकार, डी0सी0 1966 : 207–208)	वि.सं. 1195, फाल्गुन वदि 15 भौमे (मंगल)	वसेवा ग्राम, असमक पत्तला
39. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख (अर्थर, वी0 1892 : 361–363)	वि.सं. 1196 आश्विन सुदि 15, सोमदिन	जनकदेवीपुर, रान पत्तला
40. राजघाट ताम्रपत्र अभिलेख (देव, कृष्ण, 1952 5 268–273)	वि.सं. 1197 कार्तिक सुदि 15, रवि	अमवालौ पत्तला
41. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख (वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह, 2011 : 598–600)	वि.सं. 1197 फाल्गुन वदि 1, रवि	डामल (पाटक के साथ) खरहषेपशेह पत्तला
42. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 113–114)	वि.सं. 1198 फाल्गुन वदि 1 रवि	लंकाचड़ ग्राम, नवगाम पत्तला
43. गगहा ताम्रपत्र अभिलेख (कीलहार्न, एफ0 1984 : 20–21)	वि.सं. 1199 फाल्गुन सुदि, 11	शनिदिने पाँच नालु एवं बारह पाऊच भूमि हथौण्डा पत्तला
44. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख (कीलहार्न, एफ0 1895 : 114–116)	वि.सं. 1200 श्रावण सुदि 15, रवि	काइल, तेमिषपचोत्तर पत्तला
45. मछलीशहर ताम्रपत्र अभिलेख (कीलहार्न, एफ0 1959: 115–116)	वि.सं. 1201 कार्तिक सुदि 1,	सोम पेरोह, महसोय पत्तला

Scanned with CamScanner

46.	उनवल ताम्रपत्र अभिलेख **(वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह, 2011 : 624–627)**	वि.सं. 1201 कार्त्तिक सुदि 14 गुरु	म्लवली, दोहली पत्तला
47.	लार ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1981 : 98–100)**	वि.सं. 1202 वैशाख सुदि, 3	सोम पोताचवड़, पाण्डल पत्तला
48.	भदैनी ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1906 : 156–158)**	वि.सं. 1203 माघवदि 5, बुधे	चमरवामीग्राम, चार पाटक के साथ खैलपाली, नयणपाली चडुहपाली एवं हरिचन्द्रपाली वलौरा पत्तला
49.	भदैनी ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1906 : 158–159)**	वि.सं. 1207 पौष सुदि 5, सोमे	लोलिरुपाड़ा, तिवायीक्षेत्र उम्बराल पत्तला
50.	बनगवां ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1959 : 116–118)**	वि.सं. 1208 कार्त्तिक सुदि 15, भौमे (मंगलवार)	गटियारा, भीममयुता पत्तला
51.	कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 116–117)**	वि.सं. 1211 भाद्रपद वदि 15,	भौमे गौली, पाटक के साथ, कछोहा पत्तला
52.	लखनऊ स्टेट म्यूजियम ताम्रपत्र अभिलेख **(सरकार, डी0सी0, 1966 : 209–210)**	बुधे चैत्र वदि 11	काण्डणी ग्राम (तीन पाटक कशवली उसतरी एवं पौरसवली) उबरहार पत्तला
53.	लखनऊ स्टेट म्यूजियम ताम्रपत्र अभिलेख **(श्रीवास्तव, वी0एन0 1963 : 223–226)**	वि.सं. 1221 फाल्गुन मास शुक्लपक्ष, शुक्र दिन	कन्हवरा ग्राम, वलई पत्तला
54.	सुनहर स्पुरियस ताम्रपत्र अभिलेख **(सरकार, डी0सी0 1966 : 153–158)**	वि.सं. 1223 भाद्र सुदि 9, सोमे	किरिहिण्डी ग्राम, वड़ैला के साथ, सपुत्तार, पत्तला
55.	कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 117–120)**	वि.सं. 1224 आषाढ़ सुदि 10, रविदिने	हरिपुर, जियवई पत्तला
56.	रायल एशियाटिक सोसायटी ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1886 : 6–10)**	वि.सं. 1225 माघीपूर्णिमा	नागली, देवहली पत्तला

Scanned with CamScanner

57. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 120–121)**	वि.सं. 1226 आषाढ़ सुदि 6, रवि	ओरिय,बृहदगृहोकमिसार पत्तला
58. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख[60] **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 121–123)**	वि.सं. 1228 माघ सुदि 7, भौमदिन (मंगलवार)	कुसुफटा, महषो पत्तला
59. असाई ताम्रपत्र अभिलेख **(वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह 2011 : 678–682)**	वि.सं. 1229 कार्तिक सुदि 15, गुरु	लहडक्षत्रे (वक्रदेवपुर का दक्षिण) सिद्धचौट पत्तला
60. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न,एफ0 1895 : 123–124)**	वि.सं. 1230 मार्ग सुदि 15, बुधे	अहेन्ती, सरसा और अठसुआ ग्राम उनाविस पत्तला
61. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **कीलहार्न, एफ0 1895 : 124–126)**	वि.सं. 1231 कार्तिक सुदि 15,	गुरु खाम्भमौआ ग्राम, वजेम्हाछासठी पत्तला
62. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1895: 126–128)**	वि.सं. 1232 भाद्र वदि 8, रवि	बड़ेरसर कांगली पत्तला जातकर्म
63. शिहवर ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 129–135)**	वि.सं. 1232 भाद्र वदि 8, रवि	सरौड़ा और आमार्या माणर पत्तला
64. स्टेट म्यूजियम लखनऊ **(सरकार, डी0सी0 1966 : 211–213)**	वि.सं. 1232 आश्विन सुदि 14, सोम	चन्दवक, केश्वक, पयनीयी, रातु और गुदेरार
65. स्टेट म्यूजियम लखनऊ ताम्रपत्र लेख **(सरकार, डी0सी0 1966 : 217–215**	वि.सं. 1232 आश्विन सुदि 14, सोम	अवालु ग्राम
66. कमौली ताम्रपत्र अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1895 : 128–129)**	वि.सं. 1233 वैशाख सुदि 3, रवि	माटापुर, कछोहा पत्तला

Scanned with CamScanner

67. बंगाल एशियाटिक सोसायटी अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 134–135)**	वि.सं. 1233 वैशाख सुदि 10, शनि	गोड़ती (घण्टियामौयीओर, नितामौर्या के साथ) पश्चिमछपन पत्तला
68. बंगाल एशियाटिक सोसायटी अभिलेख **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 136–137)**	वि.सं. 1233 वैशाख सुदि 1, शनि कोठारवन्धुरी, कोसम्ब	पत्तला
69. स्टेट म्यूजियम लखनऊ **(सरकार, डी0सी0 1966 : 218–219)**	वि.सं. 1233 आषाढ़ वदि 15, रवि	वड़होस ग्राम, मंजोह पत्तला
70. स्टेट म्यूजियम लखनऊ **(सरकार, डी0सी0 1966 : 219–220)**	वि.सं. 1233 आषाढ़ वदि 15, रवि मव्मिजहोस	(रोहिनी पाटक के साथ)जारुह पत्तला
71. स्टेट म्यूजियम लखनऊ **(सरकार, डी0सी0 1966 : 217–218)**	वि.सं. 1233 आषाढ़ वदि 15, रवि	सरतवाड़ (तेन्दुआमी के साथ) दीरघादे य पत्तला
72. स्टेट म्यूजियम लखनऊ **(सरकार, डी0सी0 1966 : 215–216)**	वि.सं. 1233 आषाढ़ वदि 15, रवि	खवड़यी (पाटक के साथ), दीरघादे य पत्तला
73. एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, ताम्रपत्र **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 137–139)**	वि.सं. 1234 पौष सुदि 4, रवि	देयूपाली, (ववहराड़ीह, चटागेलौअपाली, सरवतातालिय, नौगमा, अम्बुआली पत्तला)
74. एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, ताम्रपत्र **(कीलहार्न, एफ0 1984:139)**	वि.सं. 1236 वैशाख सुदि 15, शुक्रे	दयड़ाम, दयड़ामी पत्तला
75. एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, ताम्रपत्र **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 140–142)**	वि.सं. 1236 वैशाख, सुदि 15, शुक्रे	सलेटि, जारुत्थ पत्तला
76. एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, ताम्रपत्र **(कीलहार्न, एफ0 1984 : 142)**	वि.सं. 1236 वैशाख सुदि 15, शुक्रे	अभेलावटु (पांच पाटक के साथ),जारुत्थ पत्तला
77. स्टेट म्यूजियम लखनऊ ताम्रपत्र **(चक्रवर्ती, एन0पी0 1942 : 291–295)**	वि.सं. 1237 फाल्गुन सुदि 7, रवि	मण्डरा (कड़ाही ग्राम के साथ) देहटदुआरा पत्तला

Scanned with CamScanner

78. आसई ताम्रपत्र अभिलेख (वर्मा, टी०पी० एवं ए०के० सिंह 2011 : 743–747)	वि.सं. 1239 माघ सुदि 15, सोम	वहदोवी, पैथुका पत्तला
79. फैजाबाद ताम्रपत्र अभिलेख (कीलहार्न, एफ० 1886 : 10–13)	वि.सं. 1243 आषाढ़ सुदि 7, रवि	कमोली, असुरेस पत्तला
80. मछलीशहर ताम्रपत्र अभिलेख (हीरानन्द, 1959 : 93–100)	वि.सं. 1253, पौष सुदि 15 रवि	ममहै (हालपाडिका और अगहला पाटक के साथ)

उपर्युक्त दानपत्रों में दान की गयी भूमि के साथ विभिन्न विशेषाधिकार भी प्रदान किया गया है। कुछ लेखों में चुनिन्दा करों की संख्या एवं नाम भी प्राप्त होते हैं। केवल भाग भोगकर सभी अनुदान पत्रों में उल्लिखित है। इनमें जिन विशेषाधिकारों का उल्लेख है वे निम्नलिखित हैं–

1. सजल–स्थल (भूमि और जल के साथ)
2. स–लोह–लवण–आकर (धातु एवं नमक के खानों के साथ)
3. स–मत्स्याकर (मत्स्य स्रोत के साथ)
4. सपर्ण–आकार (पान पत्तियों के उत्पादन करने वाली भूमि)
5. स–वार्ट–ओषर (गर्त और ऊसर के साथ)
6. स–मधूका–कूट–वन–वाटिका–विटप–तृणयूति–गोकर पर्यन्त (महुआ और आम्र वृक्ष, लकड़ी, बाग और उसकी शाखा घासभूमि एवं चारागाह के साथ)
7. स–ओर्धव–आधह (पृथ्वी के सतह के ऊपर एवं नीचे के साथ)
8. स्व–सीमा–पर्यन्त (सीमाओं के साथ)
9. चतुराघाट–विशुद्ध

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के करों (आदाय) का भी विवरण प्राप्त होता है। (i) भाग भोग कर (ii) प्रवणिकर (iii) कूटक (पअ) तुरुष्कदण्ड (v) कुमर–गदयाणक (vi) हिरण्य (v) जलकर (अपप) जलकर (viii) गाके र (पग) निधि (x) निक्षेप यमल–काम्बलिन इत्यादि। इन करों का उल्लेख दो रूपों में मिलता एक नित्य एवं दूसरा अनैमित्तिक।

प्रवणिकर– यह व्यापारियों द्वारा लिया जाने वाला चुंगी कर के समान कोई कर था **(दूबे, ए०के० 2011 : 52)**।

Scanned with CamScanner

तुरुष्कदण्ड– लल्लन जी गोपाल का यह मत तर्कसंगत प्रतीत होता है कि यह कर उन मुसलमानों से लिया जाता था जो भारत में बस गये थे **(गोपाल, एल0 1989 : 47)**।

कुमार गदयाणक – सम्भवतः गाहड़वाल राज्य में राजकुमार के लिए कर सिक्कों में लिया जाता था **(गोपाल, एल0 1989 : 52–43)**।

कूटक– कूट का अर्थ हल होता है सम्भवतः यह कर उतनी भूमि पर लिया जाता था जिसे एक हल से जोता जा सकता था **(नियोगी, आर0 1959 : 173)**।

जलकर– नियोगी के अनुसार यह कर मछलियों पर था किन्तु लल्लन जी गोपाल के अनुसार यह सिंचाई कर था **(नियोगी, आर0 1959 : 173)**।

गोकर– सम्भवतः गोकर पशुओं के पालने पर लिया जाने वाला कर था।

निधि–निक्षपे (नियोगी, आर0 1959 : 173)– नियोगी के अनुसार इसका अर्थ वह कर है जो उस सम्पत्ति पर लगता हो जो किसी ट्रस्ट के अधीन हो परन्तु यह समझ में नहीं आता कि इन करों का उल्लेख उन करों के साथ क्यों किया गया है जिनको वसूल करने का अधिकार अनुदान ग्राहियों को दिया जाता था।

यमल–काम्बलि (नियोगी, आर0 1959 : 171) – सम्भवतः यह कर विशेष प्रकार की गायिकाओं से वसूल किया जाता था।

सपर्ण–आकर– सम्भवतः यह कर पत्तों पर लिया जाता था। लल्लन जी गोपाल ने इसका अर्थ घास और ईंधन पर लगाने वाला कर माना है।

यदि यह मान लिया जाए कि अनुदानित भूमि पर राजा का अधिकार था तो एक अन्य प्रश्न उभरता है कि ब्राह्मणों और मन्दिरों की देखरेख हेतु दिये गये करमुक्त भू–दान की भूमि पर किसका स्वामित्व था और क्या दान के समय उस भूमि पर राजा का अधिकार था ? स्वामित्व के प्रश्न पर विभिन्न मत देखे जा सकते हैं। डी.सी. सरकार **(सरकार, डी0सी0 1969 : 4)** का मत है कि सैद्धान्तिक रूप में प्राचीन भारत में सम्पूर्ण भूमि राज्य से सम्बन्धित थी यद्यपि कुछ भूमि राजा के व्यक्तिगत अधिकार को दिया था। वहीं आर. एस. शर्मा **(शर्मा, आर0एस0 1965 : 141–152)** का मत है कि प्राचीन भारत में भूमि पर राजा का आधिपत्य था और सम्पूर्ण भूमि राज्य के अधीन हो ऐसा कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

लल्लन जी गोपाल **(गोपाल, एल0 989 : 47)** का भूस्वामित्व विषय में मानना है कि राजा राज्य की सम्पूर्ण वस्तु का सर्वोच्च स्वामी होता था तथा

Scanned with CamScanner

भूमि पर स्वामित्व राजा का होता था और कृषकों से राजस्वप्राप्त करता था, भूमि को सुरक्षा के एवज में था। दूसरी तरफ के. पी. जायसवाल (**जायसवाल, के0पी0 1924 : 173**) निजी स्वामित्व की वकालत करते हैं। बी. एन. एस यादव (**यादव, बी0एन0एस0, 1973 : 296**) का मानना है कि भूमि पर न तो राजा का पर्णू अधिकार था आरै न हीं निवासी का। अन्ततोगत्वा स्वामित्व के प्रश्न पर किसी एक मत पर नहीं पँहुचा जा सकता है।

भूमि पर अलग–अलग स्वामित्व देखा जा सकता है कि इस राजवंश में भूमि दान की प्रवृत्ति अत्यधिक प्रबल रही। यहाँ यह प्रश्न उभरना अत्यन्त सहज है कि इतने भू–दान की आवश्यकता क्या थी ? क्या ये केवल धार्मिक वृद्धि के लिये थे ? या अपनी ख्याति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने हेतु किये गये ? और इसका प्रभाव तत्कालीन समय की आर्थिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक पक्षों पर क्या रही होगी ? साहित्य में धार्मिक बढ़ोत्तरी एवं पुण्य हेतु भू–दान का वर्णन प्राप्त होता है।

यद्यपि इन धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष भू–दान ने राज्य की अर्थव्यवस्था और प्रशासनिक ढाँचे को निश्चित रूप से प्रभावित किया होगा? एक ओर कुछ विद्वान भूमिदान को राज्य की अर्थव्यवस्था के निकास के रूप में नहीं अपितु राज्य के लाभप्रद प्रस्ताव के रूप में देखते हैं। जिनमें एच. कुल्के (**कुल्के, एच0 1982, 237–263**) का मानना है ब्राह्मण भूमिदान व्यवस्थित राजसी नीति का भाग है जो केन्द्रीय सत्ता को कमजोर नहीं बनाती है बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से इसे मजबूती प्रदान करती है। आशीष कुमार दूबे (**दूबे, ए0के0 2011 : 98**) भी इसी मत के पक्षधर दिखाई पड़ते हैं। और उनका भीमानना था कि ब्राह्मण और अन्य को दिया जाने वाला भूमि अनुदान राजा के आर्थिक एवं प्रशासनिक अधिकारों में कमी का द्योतक नहीं था। यह लेखन की कला थी जिससे कुछ विद्वानों ने भ्रमवश यह निष्कर्ष निकाला कि भूमि का हिस्सा या ग्राम धार्मिक कारणों से अनुदान प्राप्तकर्त्ता को उसका स्वामी बनाता था। ब्राह्मणों, मन्दिरों और अन्य किसी को दी जाने वाला भूमि या ग्राम गाहड़वाल शासकों द्वारा कर मुक्त रखी गयी थी जिसे शासन कहा गया था ना कि अग्रहार।

वहीं दूसरी ओर कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि विभिन्न अधिकारों के साथ दिया जाने वाला भूमि–दान एक ऐसे वर्ग को जन्म देता है जो बिचौलिये (मध्यस्थ) का कार्य करता है जिसके कारण राज्य की शक्ति का विकेन्द्रीकरण सम्भव है और जिसके कारण सामन्तवादी व्यवस्था को भी बल

Scanned with CamScanner

प्राप्त होता है साथ ही राजा के अधिकारों में भी विशेष कमी देखी जा सकती है। किन्तु इन भू अनुदानों की प्रकृति क्या थी यह निश्चित कर पाना अत्यन्त दुरूह है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- काणे, पी0वी0 *धर्मशास्त्र का इतिहास,*. भाग 1, खण्ड–2, अनु0 अर्जुन चौबे काश्यप, उत्तर प्रदेश संस्थान, लखनऊ.
- कीलहार्न, एफ0. *''ट्वेन्टी वन कॉपर–प्लेट्स ऑफ द किंग्स ऑफ कन्नौज वि0सं0 1171–1233'' एपिग्राफिया इण्डिका,*. वाल्यूम IV ऑफिस ऑफ द सुप्रिंटेंडेट ऑफ गवर्नमेंट प्रिन्टिंग, कलकत्ता, 1895, पृ0
- कीलहार्न,. *''थ्री कॉपर प्लेट इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ गोविन्दचन्द्र ऑफ कन्नौज'' एपिग्राफिया इण्डिका,* वाल्यूम V, आर्कियॉलजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1959, पृ0 113–1,18.
- कीलहार्न,. *''फाइव कॉपर प्लेट इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ गोविन्दचन्द्र ऑफ कन्नौज'', एपिग्राफिया इण्डिका,* वाल्यूम VIII, ऑफिस ऑफ द सुपिंटेंडेट ऑफ गवर्नमेंट प्रिन्टिंग कलकत्ता, 1906, पृ0
- कीलहार्न, *''कॉपर–प्लेट ग्रान्ट्स ऑफ द किंग्स ऑफ कन्नौज'' इण्डियन एण्टिक्वरी,* वाल्यूम, XVIII, स्वाति पब्लिकेशन्स देल्ही, 1984 पुनर्मुद्रित, पृ0 14–21, 129–142.
- कीलहार्न, एफ0, *टू कॉपर प्लेट ग्रान्ट्स ऑफ जयचन्द्र ऑफ कन्नौज, ''इण्डियन एन्टिक्वारी,* वाल्यूम, XV, एजूकेशन सोसायटीज प्रेसर, बाम्बे, 1886, पृ0 10–13.
- कीलहार्न, *''लार प्लेट ऑफ गोविन्दचन्द्र ऑफ कन्नौज,* वि0सं0–1202'', एपिग्राफिया इण्डिका, वाल्यूम VIII, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया : 1981, पुनर्मुद्रित, पृ0 98–100.
- कुल्के,एच0, *''फ्रैगमेंट एण्ड सेगमेंटेशन वर्सस इंटेग्रेशन : रिफ्लेक्शनस आन द कॉन्सेप्ट्स ऑफ इण्डियन फ्यूडलिज्म एण्ड द सेंगमेंटरी स्टेट इन इण्डियन सोसायटी'', स्टडी ऑन हिस्ट्री,* जिल्द IV, (II), 1982, पृ0 237–263.
- कोनो, एस0 *''चन्द्रावती प्लेट ऑफ चन्द्रदेव : संवत् 1148'' एपिग्राफिया इण्डिका,* वाल्यूम IX, आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिका, न्यू देल्ही, 1981 पुनर्मुद्रित, पृ0 302–305.
- गोपाल, एल0 *इकोनॉमिक लाइफ ऑफ नार्दन इण्डिया,* मोतीलाल बनारसीदास, देल्ही 1989, सेकण्ड रिवाइज्ड, एडिशन.
- चक्रवर्ती, एन0पी0 *''लखनऊ म्यूज़ियम प्लेट ऑफ जयचन्द्रदेव–वि0सं0 1237'', एपिग्राफिया इण्डिका,* वाल्यूम, XXIV मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, देल्ही 1942, पृ0 291–295.
- जायसवाल, के0पी0 *हिन्दू पॉलिटी,* भाग 2.

Scanned with CamScanner

- देव,के0 *"राजघाट प्लेट् ऑफ गोविन्दचन्द्र : वि0स0 1197"*, *एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम, XXVI, मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, देल्ही 1952 पुनर्मुद्रित, पृ0 268–278.
- दूबे, ए0के0 *कल्चर अण्डर द गाहड़वालाज : एन एपिग्राफिकल स्टडी* शारदा पब्लिशिंग हाउस, देल्ही, 2011.
- नियोगी, आर0 द *हिस्ट्री ऑफ गाहड़वाल डायनेस्टी0* ओरियन्टल बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 1959.
- फ्लीट् जे0एफ0, *"संस्कृत एण्ड कन्नरीज़ इन्स्क्रिप्शन्स" इण्डियन एन्टिक्वारी : जर्नल ऑफ ओरियण्टल रिसर्च*, वाल्यूम, XIV 1885, स्वाति पब्लिकेशन्स, देल्ही, 1964, पुनर्मुद्रित.
- मेहता, एन0सी0 *"भदवना ग्रान्ट ऑफ गोविन्दचन ऑफ कन्नौज़" एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम–XIX, आर्कियॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1983, पुनर्मुद्रित, पृ0 291–294.
- यादव, बी0एन0एस0, *आस्पेट्स ऑफ दि सोसायटी इन नार्दन इण्डिया इन द ट्वेल्थ सेंचूरी*, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, 1973.
- वर्मा, टी0पी0 एवं ए0के0 सिंह, *"इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ द गाहड़वालाज एण्ड दियर टाइम्स*, वाल्यूम II, आर्यन बुक्स इण्टरनेशनल न्यू देल्ही, 2011.
- वेनिस, ए0 *"बनारस कॉपर प्लेट ग्रान्ट्स ऑफ गोविन्द चन्द्र ऑफ कन्नौज", एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम II (न्यू सीरिज़), ऑफिस ऑफ द सुप्रिंटेंडेन्ट ऑफ गवर्नमेंट प्रिंटिग कोलकाता, 1892, पृ0 358–363.
- शास्त्री, हीरानन्द, *"कॉपर प्लेट इन्स्क्रिप्शन, ऑफ गोविन्द चन्द्र देव : स0 1186", एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम XI, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, न्यू देल्ही, 1981 पुनर्मुद्रित, पृ0 295–297.
- शर्मा, आर0एस0 *इण्डियन फ्यूडलिज्म*, मोतीलाल बनारसीदास, बी0 दिल्ली, 1965.
- सरकार, डी0सी0, *"सम गहड़वाल ग्रान्ट्स" एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम XXXV, मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन, देल्ही 1966, 207–220.
- सरकार, डी0सी0, *"इलाहाबाद म्यूजियम प्लेट ऑफ गोविन्दचन्द्र : वि0सं0 1171", एपिग्राफिया इण्डिका, वाल्यूम XXXIII*, आर्कियॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1987, पुनर्मुर्द्रित.
- सरकार, डी0सी0, *"लैण्ड सिस्टेम एण्ड फ्यूडलिज्म इन एन्शिएंट इण्डिया*, लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, 1969.
- साहनी, डी0, *"चन्द्रावती प्लेट ऑफ चन्द्रदेव : वि0सं0 1150 एंड 1156", एपिग्राफिया इण्डिका वाल्यूम, XIV*,. ऑफिस ऑफ सुप्रिटेंडेट गवर्नमेंट प्रिन्टिंग, कलकत्ता, 1918, पृ0 192–200.
- साहनी, डी0 *"दोनबुजुर्ग प्लेट ऑफ गोविन्द्र चन्द्र : वि0सं0 1176", एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम XVIII,. आर्कियॉलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1983, पुनर्मुद्रित, 218–224.

Scanned with CamScanner

- साहनी, डी0, *"छतरपुर कॉपर प्लेट इन्स्क्रिपशन्स ऑफ गोविन्द चन्द्रदेव ऑफ कन्नौज : वि0सं0 1177"*, *एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम, XVIII, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1983, पुनर्मुद्रित, पृ0 224–226.
- साहनी, डी0, *"सहेत–महेत, प्लेट् ऑफ गोविन्दचन्द्र : वि0सं0 1186"*, *एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम XI, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1981 पुनर्मुद्रित, पृ0 20–26.
- श्रीवास्तव, वी0एन0 *"लखनऊ म्यूजियम प्लेट ऑफ विजयचन्द्र सं0 1221"*, *एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम XXXIV, मैनेजर ऑफ पब्लिकेशंस, देल्ही, 1963, पृ0 223–226.
- हीरानन्द, *मछली शहर, कॉपर प्लेट् ऑफ हरिश्चन्द्रदेव, ऑफ कन्नौज वि0सं0 1253"*, *एपिग्राफिया इण्डिका*, वाल्यूम, XXIV, मैनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, देल्ही 1942, पृ0 291–295.
- हार्नले, *ए0एफ0आर0 ए0न्यू0 कॉपर प्लेट ग्रान्ट ऑफ गोविन्दचन्द्र ऑफ कन्नौज"*, *इण्डियन एन्टिक्वारी*, वाल्यूम XIX, स्वाति पब्लिकेशन, 1985, पृ0 249–254.

★

Scanned with CamScanner

मनीष प्रकाशन

प्लाट नं0-26, रोहित नगर कालोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी

ISBN - 978-93-88007-49-8

ISBN - 978-93-88007-49-8

मूल्य : 525.00 रुपये

Scanned with CamScanner

भारत के विभिन्न राज्यों के प्रमुख पारंपरिक पर्व एवं त्योहार

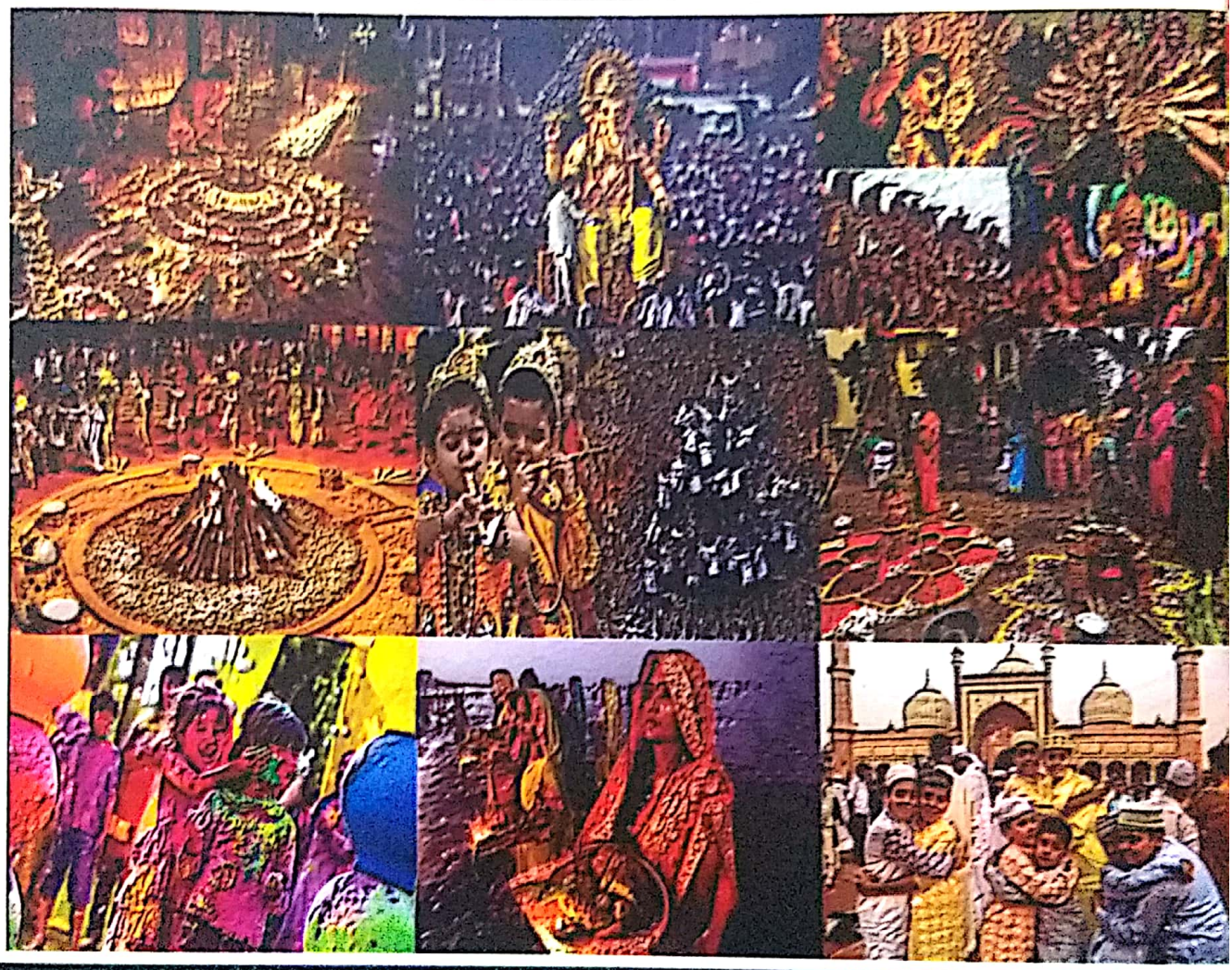

संपादक

डॉ. शशिकला

राजलक्ष्मी जायसवाल

Scanned with CamScanner

भारत के विभिन्न राज्यों के प्रमुख पारंपरिक पर्व एवं त्योहार

संपादक

डॉ. शशिकला

राजलक्ष्मी जायसवाल

समकालीन प्रकाशन

नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

कर्नाटक के पर्व एवं त्योहार सांस्कृतिक वैभव के प्रतिबिंब हैं
–प्रो. उषारानी राव 19

झारखण्ड के प्रमुख पर्व एवं त्योहार
–डॉ. चंद्रिका ठाकुर 28

जीवंत और अनंत रंगों की धरोहर 'त्योहारों की भूमि': गुजरात
–डॉ. अंशु शुक्ला 34

संस्कृति और सभ्यता का शहर गोवा
–डॉ. सपना भूषण 48

मेघालय राज्य में प्रचलित प्रमुख पारंपरिक पर्व
–डॉ. आरती कुमारी 55

उत्तर प्रदेश के प्रमुख व्रत एवं त्योहार : होली के विशेष संदर्भ में
–डॉ. शुभांगी श्रीवास्तव 65

असम : लोक संस्कृति और पर्व
–डॉ. अंकिता विश्वकर्मा 78

हरियाणा के व्रत एवं त्योहार
–डॉ. प्रीति विश्वकर्मा 86

तेलंगाना संस्कृति की आत्मा बतुकम्मा पर्व
–डॉ. किरण शास्त्री 96

नागालैंड : उत्सव की भूमि
–डॉ. गीता राय 104

Scanned with CamScanner

मेघालय राज्य में प्रचलित प्रमुख पारंपरिक पर्व

-डॉ. आरती कुमारी
सहायक आचार्य
प्रा.भा.इ.स. एवं पुरातत्त्व विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा,
वाराणसी

सार संक्षेपण

मेघालय भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। यह अपनी प्राकृतिक वातावरण एवं संस्कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के लोग जनजातीय परंपरा से विशेष रूप से जुड़े हैं। मेघालय दो प्रमुख भागों में विभाजित है- खासी-जयंतिया क्षेत्र और गारो पर्वतीय क्षेत्र। इस राज्य में कई जनजातीय समूह निवास करते हैं जिनमें खासी, जयंतिया एवं गारो प्रमुख हैं, ये मातृसत्तात्मक जनजातियाँ हैं। गारो 'आचिक' या 'मंडे' नाम से जाने जाते हैं, जिसका अर्थ 'पहाड़ी मानव' या 'पहाड़ी जनजाति' है। इनके पर्व दैनिक जीवन से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। जिसमें खेत में बीज बोने से लेकर काटने तक से जुड़े हुए हैं। जो उन्हें वहाँ की धरती से भी जोड़ती है। वहाँ के पर्वों में प्रचलित परंपरागत नृत्य एवं परिधान से उनकी मौलिकता और अपनी संस्कृति को संजोये रखने की ललक भी झलकती है। ये अपने पर्व के माध्यम से भारत की शक्ति विविधता में एकता को चरितार्थ करते हैं। आधुनिक समाज में भी पर्वों के द्वारा अपनी संस्कृति के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाते हैं।

मूल शब्द:- मेघालय, गारो, खासी, जयंतिया, वांगला पर्व।

मेघालय भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों का एक अभिन्न हिस्सा है। यह राज्य अपने प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ अपने सांस्कृतिक विविधता के लिए भी अत्यंत प्रसिद्ध है। मेघालय का संस्कृत अर्थ 'बादलों का

Scanned with CamScanner

निवास' है। 21 जनवरी, सन् 1972 को मेघालय एक अलग पूर्ण राज्य बना। वर्तमान में भौगोलिक सीमा के अंतर्गत इसके पूर्व में असम और पश्चिम में बांग्लादेश स्थित है। मेघालय दो प्रमुख भागों में विभाजित है- खासी-जयंतिया क्षेत्र और गारो पर्वतीय क्षेत्र। इस राज्य में कई जनजातीय समूह निवास करते हैं जिनमें खासी-जयंतिया एवं गारो प्रमुख हैं, ये मातृसत्तात्मक जनजातियाँ हैं। गारो 'आचिक' या 'मंडे' नाम से जाने जाते है, जिसका अर्थ 'पहाड़ी मानव' या 'पहाड़ी जनजाति' है। ये तिब्बत के गारो से प्रवर्जित होकर उत्तरी तिब्बत के पठार में बस गए और वहाँ से अबोंग नोगा के सानिध्य में निवासित हुए। गारो जनजाति वनिय क्षेत्र में निवास करती है और उनका जीवन मुख्यतः झूम खेती पर निर्भर है। मेघालय के जनजातियों के अपने अलग-अलग कुछ विशेष त्योहार हैं। ये त्योहार यहाँ के निवासियों के साथ-साथ पूरे देश-दुनिया के पर्यटकों को भी अत्यंत आकर्षित करते हैं। यह त्योहार धार्मिक और सांस्कृतिक दोनों ही रूपों में महत्त्वपूर्ण है। गारो जनजाति द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख उत्सवों में वांगला अत्यंत प्रमुख है। लेकिन इसके पूर्व कुछ अन्य महोत्सव मनाया जाता है। वे निम्नलिखित है-

अओपटा पर्वः- इस त्योहार के साथ वर्ष की शुरुआत की जाती है जो कृषि भूमि पर सभी परिवारों द्वारा मंत्रोचारण के साथ मनाया जाता है।

देंबिल्सिया पर्वः- यह झूम खेती के समापन पर जनवरी-फरवरी के मध्य मनाया जाता है और नोक्मा के आवास पर आशीर्वाद के लिए देव को लाया जाता है तत्पश्चात तलवारों के साथ नृत्य का आयोजन किया जाता है उसके बाद भोज का आयोजन किया जाता है।

असीरोका पर्वः- यह पुराने झूम क्षेत्र में चावल और अन्य फसलों के रोपण के संबंध में मनाया जाता है। इसके दौरान बलि दी जाती है और सभी प्रतिभागियों को पशु का मांस वितरित किया जाता है। माइट मिसी सालजोंग के आशीर्वाद के लिए पूजा की जाती है। इस पर्व का समापन अविवाहित लड़के और लड़कियों के नृत्य के साथ होता है।

अगलमक पर्वः- अगलमक खेती के लिए साफ की गई झूम जमीन को जलाने के तुरंत बाद किया जाता है। प्रत्येक परिवार एक अंडे की बलि देकर इसे व्यक्तिगत रूप से अपने क्षेत्र में करता है। नोकमा पक्षी का बलिदान करतें हैं। इसके बाद खेतों में बीज को बिखेर कर बोया जाता है।

Scanned with CamScanner

कुछ दिनों तक दावत, एक-दूसरे से मिलने-जुलने और गायन-नृत्य की प्रक्रिया चलती रहती है।

रोंगचू गाला पर्व:- इस पर्व में फसल काटने से पहले सबसे पहले ईष्ट देव को अर्पित करने की परंपरा है। इसमें नई फसल से तैयार किए गए संचालित चावल अर्पण किये जाते हैं। नोकमा द्वारा तैयार स्थान पर यह प्रसाद केले के पत्ते पर रखा जाता है। इस अवसर पर अर्पित की जाने वाली अन्य वस्तुओं में चूना और गन्ना शामिल हैं। और अंत में लोग भोजन ग्रहण करते हैं और वाद्य यंत्र बजाते हैं।

अहिया पर्व:- आमतौर पर सितंबर में अच्छी फसल पूरी होने पर ईष्ट को धन्यवाद के रूप में अहिया समारोह आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर हर घर में मछली, सूखी मछली या केकड़ा पकाया जाता है और देव को अर्पित किया जाता है। कई दिनों तक उत्सवनृत्य आदि के रूप में मनाया जाता है।

वांगला पर्व:- यह गारो जनजाति का सबसे प्रसिद्ध और सबसे बड़ा त्योहार है। यह अपने इष्ट के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु आयोजित की जाती है। गारो समुदाय के लगभग सभी खंड इसे मनाते हैं। नोकमा द्वारा तारीखों की घोषणा के बाद इस त्योहार की तैयारी पहले से शुरू हो जाती है। त्योहार के दौरान मेहमानों को आवास प्रदान करने हेतु ग्रामीणों द्वारा अपने घरों की मरम्मत की जाती है। इस पर्व में नोकमा के घर से अनुष्ठान और बलिदान के साथ शुरू होता है। इसके बाद कुछ रस्में निभाई जाती हैं और इस शाम के दौरान कमल (पुजारी) बाँधते हैं। बर्तन के मुंह के चारों ओर सूती धागा और मन्त्रों द्वारा आत्मा का आह्वान किया जाता है। इसमें तीन मुर्गों की कुर्बानी दी जाती है और रक्त को बर्तन और धागे पर छिड़का जाता है और बाद में बर्तन के मुंह के चारों ओर पक्षी के पंख बांधे जाते है। यह भावना धन से जुड़ी है। इसके बाद पुजारी जी घर की सामने की दीवार के सामने नोकनी घुन की पूजा करें या एक लाल मुर्गे की बलि देकर और पूरी दीवार पर खून और पंख बिखेर कर घर की आत्मा को शांत करें। उसी प्रकार अन्य छोटे देवताओं की पूजा मुर्गे और मुर्गियों की बलि देकर की जाती है। आग के चारों ओर नृत्य करता है। नोकमा व अन्य निवासी भी उससे जुड़ते हैं। नृत्य के बाद महिलाएँ प्रतिभागियों को पाउडर राइस केक बाँटती हैं। इस समारोह में महिलाएँ अपने पारंपरिक

Scanned with CamScanner

औपचारिक परिधानों में नृत्य करती हैं। इस प्रकार अन्य देवी-देवताओं को नृत्य-पूजन चलता रहता है कभी-कभी अलग-अलग जगहों पर जैसे पुजारी के घर आदि। इन नृत्यों में विवाहित और अविवाहित दोनों भाग लेते हैं। ऐसे अवसर युवा पीढ़ी के सदस्यों को अपना साथी चयन करने का अवसर देते हैं। इस वांगला उत्सव में नर्तक दो समानांतर रेखाओं में एक पंक्ति बनाते हैं- एक पुरुष की और दूसरी पुरुष की महिलाएँ, दोनों उत्सव के पारंपरिक परिधानों में निकल रही हैं। पुरुष ढोल पीटते हैं और धुन के साथ आगे बढ़ते हैं घड़ियालों, भैंसों के सींग, बांसुरी और नगाड़ों से निकलने वाले संगीत की ध्वनि। नर्तक ऊर्जावान दिखाते हैं, वैसे तो यह त्योहार मेघालय राज्य का प्रमुख त्योहार है लेकिन इसके साथ-साथ वांगला त्योहार

वांगला पर्व (स्त्रोत : विकिपीडिया)

असम, नागालैंड तथा बांग्लादेश के कुछ हिस्सों में भी मनाया जाता है।

7 दिसंबर 1976 को मेघालय के राज्य सरकार द्वारा सबसे पहली बार वांगला त्योहार के आधुनिक रूप '100 ड्रमों के त्योहार' को शुरू किया गया था जो प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। इस त्योहार में अलग-अलग प्रतियोगिताएँ होती हैं। यह 2 से 3 दिन तक मनाया जाने वाला त्योहार है।

बेहदीनखलम उत्सव:- यह राज्य का अत्यंत लोकप्रिय त्योहार है।

Scanned with CamScanner

बेहदीनखलम त्योहार राज्य के जयंतिया जनजातीय के द्वारा मनाया जाता है। यह त्योहार प्रत्येक वर्ष जुलाई माह में मनाया जाता है। जयंतिया जनजातीय समूह के द्वारा अपने फसलों के बुवाई के बाद यह त्योहार पूरे जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है इस त्योहार में अनेक पारंपरिक रस्मों को निभाया जाता है। बेहदीनखलम त्योहार के माध्यम से लोग अपने इष्टदेव से एक अच्छी फसल की कामना करते हैं। इस त्योहार में समुदाय के सभी लोग एक विशेष जगह पर इकठ्ठा होते हैं जहाँ पर बने एक खम्बे के चारो तरफ लोग पारंपरिक नृत्य करते हैं। हालाँकि इस नृत्य में समाज की महिलाएँ शामिल नहीं होती हैं क्यूंकि घर में उन्हें अपने इष्टदेव के लिए अनेक अन्य रस्मों को निभाना पड़ता है। बेहदीनखलम त्योहार में बाँस से बने खंभेनुमा विशेष आकृति जिसे कि रंग-बिरंगे कागजों से सजाया जाता है आम लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के लिए आकर्षण का विशेष केंद्र होता है। यह त्योहार चार दिनों तक चलता है और लोगों के जीवन में नए उत्साह के साथ-साथ नए रंग भर के जाता है।

सेंग कूट नेम पर्व:- मेघालय जनजातीय समूहों का राज्य है। यहाँ कई जनजातीय समूह निवास करते हैं जैसे कि गारो, खासी, जयंतिया इत्यादि। इन्ही जनजातीय समूहों में से एक खासी जनजातीय समूह जो कि मेघालय की सबसे बड़ी जनजातीय समूह भी है, के द्वारा सेंग कूट नेम त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार प्रत्येक वर्ष नवम्बर माह के 23 तारीख को मनाया जाता है।

सेंग कूट नेम (स्त्रोत : प्रोकेला.कॉम)

Scanned with CamScanner

दरअसल भारत पर अंग्रेजी शासन के दौरान मेघालय के खासी समुदाय के 16 युवकों ने अपनी परंपरा और रीति-रिवाजों को अंग्रेजी प्रभावों से बचाने के लिए 23 नवम्बर, सन् 1899 को एक संगठन का निर्माण किया था। इस संगठन का नाम 'खासी यंग मेंस एसोक असोसिएशन' था। इन युवकों द्वारा अपने समुदाय की रक्षा के लिए उठाए गए इस सराहनीय कदम की याद में ही प्रत्येक वर्ष 23 नवम्बर को यह त्योहार खासी समुदाय के द्वारा बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इस दिन मेघालय की राजधानी शिलॉन्ग में खासी समुदाय के लोग झाँकियाँ निकालकर खासी समुदाय के इतिहास और परंपरा से नवयुवकों को प्रेरित करने का प्रयास करते हैं। खासी जनजातीय द्वारा अच्छी फसल प्राप्ति पर अपने देवता को धन्यवाद देने के लिए भी सेंग कूट नेम त्योहार मनाया जाता है। इस दिन समुदाय के लोग पारंपरिक नृत्य, गीत, भोजन के साथ-साथ अपने त्योहार का आनंद उठाते हैं।

शाद सुक मिनसिमः- यह पर्व प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह में मनाया जाता है। मेघालय राज्य के प्रमुख जनजातीय समुदाय खासी जनजाति के द्वारा यह त्योहार मनाया जाता है। खासी जनजाति द्वारा अपने इष्टदेव को अच्छी फसल प्राप्ति के बाद धन्यवाद देने के उद्देश्य से यह त्योहार मनाया जाता है। शाद सुक मिनसिम का अर्थ शांत हृदय से किये गए नृत्य से है। इस त्योहार में खासी समुदाय के द्वारा एक विशेष प्रकार का नृत्य किया जाता है जिसमें महिला और पुरुष दोनों की भागीदारी समान होती है। इस

शाद सुक मिनसिम (स्त्रोत : द शीलोंग टाइम्स)

Scanned with CamScanner

नृत्य में समुदाय के लोग अपने निजी जीवन को चरितार्थ करते हैं, जिसमें महिलाएँ बीच में नृत्य करती हैं तथा पुरुष उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को दर्शाते हुए हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। सभी प्रतिभागी अपने परंपरागत वेशभूषा में त्योहार मनाते हैं। यह त्योहार तीन दिनों तक मनाया जाता है तथा मेघालय की राजधानी शिलाँग में इस उत्सव को मनाने के लिए विशेष आयोजन किये जाते हैं।

नोंगक्रेम डांस फेस्टिवल:- यह त्योहार भी मेघालय राज्य के अन्य त्योहारों की तरह ही बहुत लोकप्रिय है। मेघालय राज्य के खासी जनजाति के द्वारा इस त्योहार को मनाया जाता है। नोंगक्रेम डांस फेस्टिवल मुख्यत: पारंपरिक डांस को प्रदर्शित कर अपने इष्टदेव 'का ब्लेई सिन्शर' को धन्यवाद देने का एक तरीका है। यह त्योहार प्रत्येक वर्ष नवंबर माह में मेघालय राज्य की राजधानी शिलाँग के पास ही स्थित स्मित (Smit) में आयोजित किया जाता है। इस डांस फेस्टिवल में अविवाहित लड़कियाँ भाग लेती हैं तथा एक विशेष प्रकार के नृत्य कला का प्रदर्शन करती हैं। इस नृत्य में लड़कियों के दाहिने हाथ में एक तलवार तथा बाएँ हाथ में याक के बालों से बना एक गुच्छा होता है। इस नृत्य क्रिया में शामिल सभी लड़कियाँ अपने पारंपरिक वेश-भूषा में बहुत ही आकर्षक दिखाई देती हैं। ये लड़कियाँ ढोल-बाजे तथा शहनाई के धुन पर नृत्य करती हैं। नोंगक्रेम डांस फेस्टिवल में समुदाय के मुख्य पुजारी द्वारा समुदाय के देवता

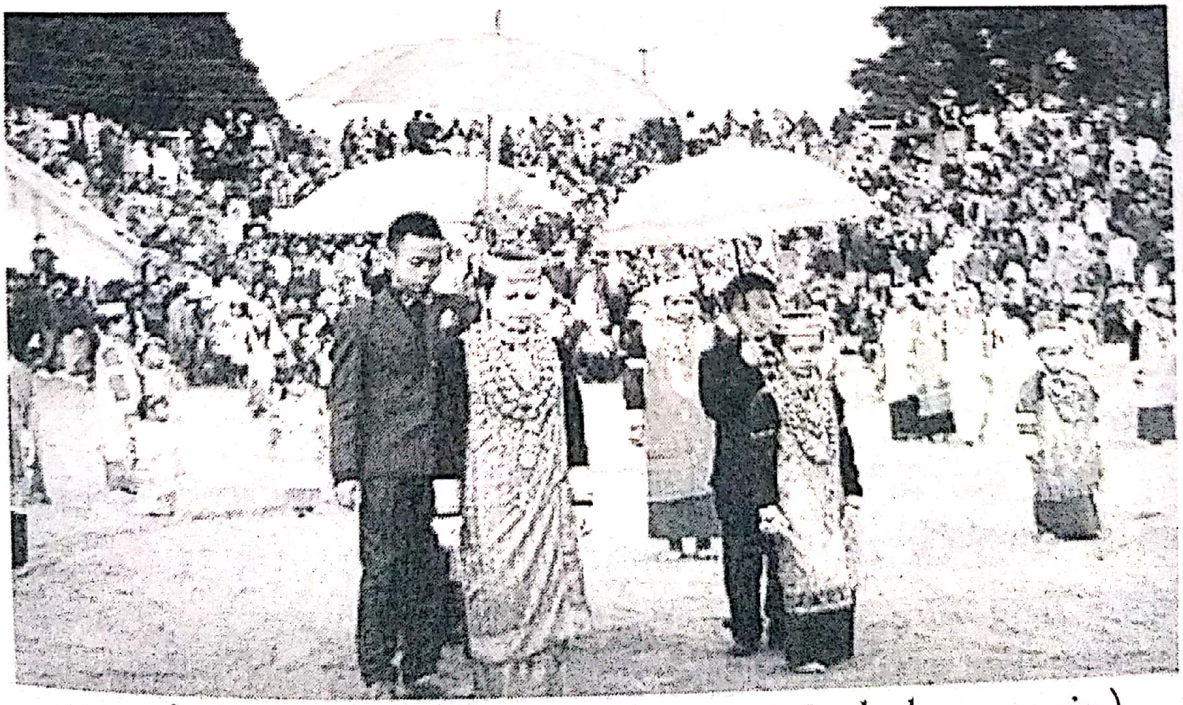

नोंगक्रेम डांस फेस्टिवल- (Source: Meghalaya.gov.in)

Scanned with CamScanner

'लेई शिलाँग' को खुश करने के लिए यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस यज्ञ में देवता के समक्ष मुर्गे की बलि दी जाती है। नोंगक्रेम डांस फेस्टिवल में पोम्ब्लांग नामक एक अन्य पूजा का भी आयोजन किया जाता है जिसमें बकरी की बलि दी जाती है। यह चार दिनों तक मनाया जाने वाला त्योहार है।

शाद सुकरा:- यह त्योहार मेघालय राज्य के जयंतिया जनजाति के लोगों द्वारा मनाया जाता है। मेघालय राज्य में मनाये जाने वाले अन्य सभी त्योहारों की भांति ही यह त्योहार भी फसलों से सम्बंधित है। शाद सुकरा त्योहार फसलों की बुवाई के पहले मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने का मुख्य उद्देश्य अपने फसलों को आपदाओं इत्यादि से होने वाले नुकसान से बचाना है। इस त्योहार में समुदाय के लोग विभिन्न प्रकार के परंपरागत वेशभूषा में नृत्य करते हैं। अपने त्योहार को उत्साह के साथ मनाने के लिए इस दिन विभिन्न प्रकार के पकवान बनाये जाते हैं। यह त्योहार पूरे मेघालय के अलग-अलग क्षेत्रों में मनाया जाता है।

शाद सुकरा (Source: Pinterest)

निष्कर्ष

भारत एक विविध संस्कृतियों से परिपूर्ण देश है। इसकी विविधता यहाँ के भौगोलिक और पर्यावरणीय स्थिति के कारण संभव हो सका है। विभिन्न राज्यों की अपनी अलग सांस्कृतिक विरासत है। मेघालय भी अपनी भौगोलिक और पर्यावरणीय विशेषताओं के कारण विशेष है। उपर्युक्त पर्वों के आधार पर उनकी सामाजिक एकता और अपने पारंपरिक धरोहरों को

Scanned with CamScanner

संजोने के साथ आने वाली पीढ़ी को सुपुर्द करने का उपक्रम देखा जा सकता है। उपर्युक्त प्रमुख पर्वों में कृषि जो उनके जीविकोपार्जन का मूल व्यवसाय है, उसके लगातार बने रहने और जो उन्हें प्राप्त है, उसके लिए अपने इष्ट के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के सन्दर्भ में आयोजित किये जाते हैं। इस क्षेत्र में निवासित गारो, खासी एवं जयंतिया जनजातियों के अपने पर्व उनके इष्ट को समर्पित है। इसके माध्यम से पारंपरिक नृत्य, परिधान, भोजन एवं अमूर्त संस्कृति को जीवन्तता प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ :

1. Bareh, h. 1985. History And culture of the khasi people. Gauhati: spectrum publications
2. Bareh, h. 1991. The Art history of meghalaya. New delhi: Agam kala prakashan.
3. Bareh, h. 2001. Encyclopaedia of north-east india: Meghalaya. Vol. Iv. New delhi: mittal publications.
4. Bauman, richard (ed.). 1992. Folklore, cultural PerformancesAnd popular entertainments. London: Oxford university press.
5. Khongphai, A. S. 1979. Shad suk mynsiem. In hipshon Roy (ed.). Khasi heritage. Shillong: ri khasi press.
6. Kyndiah, p.R. 1979.A peep into khasi-jaintia music. In hipshon roy (ed.). Khasi heritage. Shillong: ri Khasi press.
7. Lyngdoh, m.P.R. 1991. The festivals in the historyAnd Culture of the khasi. New delhi: vikas publishing House.
8. Giri, h. (2002.)The khasis under british rule (1824 1947); Regency publications, new delhi.
9. Miangky.N.MarakAnd dr. V. Thirumurugan . 2021 'Wangala festival of the garo in Meghalaya, north east india'.Jouranal Of emerging technologiesAnd innovative research,

Scanned with CamScanner

September 2021. Volume 8, issue 9
10. Pakyntien, v. (1996) The khasi clan: changing religion And effects; cosmos publication, new delhi.
11. P, r, g (2003). Khasi of meghalaya: A study in tribalism and religion, cosmo publications, newdelhi.

Scanned with CamScanner

स्वराज के स्वर

संपादक द्वय : डॉ. आशीष कुमार साव
डॉ. अमित कुमार दीक्षित

HARVARD WORLD RECORDS
LONDON

Scanned with CamScanner

स्वराज के स्वर

संपादक द्वय
डॉ. आशीष कुमार साव
डॉ. अमित कुमार दीक्षित

अनेकता में एकता का प्रतीक
के.बी.एस. प्रकाशन दिल्ली

Scanned with CamScanner

11. शहीद मदन लाल ढींगरा... 87
- हरिनन्दन वाल्मीकि, पैरोकार एवं सोशल एक्टिविस्ट
पिधौरागढ़, उत्तराखण्ड
12. राम प्रसाद बिस्मिल... 93
- डॉ. शैलजा श्रीवास्तव, लेखक
जबलपुर, मध्य प्रदेश
13. गणेश दामोदर सावरकर... 101
- रूचि रानी, लेखक
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
14. राष्ट्रीयता और भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर... 111
- डॉ. प्रतिमा प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
काजी नजरुल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल
15. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदः खुदीरामबोस... 116
- रुद्र चरण माँझी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
16. आज़ादी के परवाने अमरवीर अशफाक उल्ला खान... 127
- रामप्रसाद शुक्ल, लेखक
17. शहीद मदन लाल ढींगरा... 132
- हरिनन्दन बाल्मीकि, पिधौरागढ़, उत्तराखण्ड
18. भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्र निर्मात्रीः डॉ. एनी बेसेंट... 137
- डॉ. आरती कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
19. महानतम क्रांतिकारी लाला हरदयाल... 144
- डॉ. सुरभि दत्त, एसोसिएट प्रोफेसर,
सिकंदराबाद, तेलंगाना
20. जंगल का नायक रंपा बिद्रोही का विप्लव वीरः अल्लूरी सीताराम राजू 149
- डॉ. स्नेह लता शर्मा, पूर्व प्राचार्य
नानकराम भगवानदास साइंस कॉलेज, हैदराबाद तेलंगाना
21. पी.वी. नरसिंहराव 156
- वाणी गौरठी, लेखक
22. स्वतंत्रता संग्राम का महान आदिवासी वीरः बिरसा मुंडा.... 161
- अर्चना पाठक, सहायक अध्यापक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय
राँची, झारखण्ड

Scanned with CamScanner

भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्र निर्मात्री : डॉ. एनी बेसेंट

डॉ. आरती कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

शोध सार :

स्वतंत्रता किसी भी व्यक्ति, समाज, देश के लिए महत्वपूर्ण एवं मौलिक अधिकार होता है। भारत देश प्राचीन काल से ही अपनी वैशिष्ठता और विविधता के लिए विश्व प्रसिद्ध रही किन्तु भारतीय इतिहास में एक ऐसा भी समय आया जब इसे परतंत्रता से गुजरना पड़ा। अतः इस परिस्थिति से उभरने के लिए संग्राम की स्थिति बन गई, जिसमें अनगिनत लोगों ने अपना योगदान दिया। इस आन्दोलन में डॉ. एनी बेसेन्ट का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। डॉ. एनी बेसेन्ट ने भारतीय न होते हुए भी यहाँ की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व दान कर दिया। डॉ. बेसेन्ट १६ नवम्बर १८९३ को पहली बार भारत भूमि पर क़दम रखा। डॉ. एनी बेसेन्ट का व्यक्तित्व बहुयामी रहा है। वह भारतीय स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ ही राजनीतिज्ञ, अध्यात्मिक शिक्षिका, महान समाज सुधारक, महान शिक्षाविद, कवयित्री, अद्वितीय वक्ता भी रहीं। उनके व्यक्तित्व की बड़ी विशेषता थी की उनमें एक साथ ऋषि और योद्धा दोनों के गुण विद्यमान थे। १९१४ में अपने ६८ वर्ष के उम्र में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रवेश किया। और इसके साथ ही "होमरूल" आन्दोलन प्रारम्भ किया। यह आन्दोलन भारतीय और कांग्रेस की राजनीति का नया जन्म माना जाता है। जिसकी विस्तृत चर्चा लेख में की गई है।

बीज शब्द :

स्वतंत्रता संग्राम, होमरूल, राष्ट्रीय कांग्रेस, थियोसोफिकल सोसाइटी, राष्ट्र निर्माण।

एनी बेसेंट का जन्म भारत की स्वतंत्रता से ठीक १०० वर्ष पूर्व १ अक्टूबर, १८४७ में लन्दन में हुआ था। उनकी माता आयरिश महिला थी वहीं

Scanned with CamScanner

उनके पिता देवोंशिरे वुड की माता भी आयरिश थीं। एनी बेसेंट के पिता पेशे से डॉक्टर थे। डॉ० बेसेन्ट के ऊपर इनके माता पिता के धार्मिक विचारों का गहरा प्रभाव था। डॉ० बेसेन्ट मात्र पाँच वर्ष की थी जब उनके पिता मृत्यु को प्राप्त हो गए। पिता की मृत्यु के बाद धनाभाव के कारण इनकी माता इन्हें हैरो ले गईं। वहाँ मिस मेरियट के संरक्षण में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। कुछ समय जर्मनी एवं फ्रांस में भी व्यतीत किया और १७ वर्ष की आयु में अपनी माँ के पास वापस आ गईं।

युवावस्था में एनी बेसेंट का जुड़ाव रेवरेण्ड फ्रैंक नामक एक युवा से बढ़ा, जो पेशे से पादरी थे। और १८६७ में दोनों का विवाह संपन्न हुआ। किन्तु पति के विचारों से असमानता के कारण उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहा। एक तरफ जहाँ एनी स्वतंत्र विचारों वाली आत्मविश्वासी महिला थी वही उनके पति संकुचित विचारों से ग्रसित पुरुष। वे १८७० तक दो बच्चों की माँ बन चुकी थीं। ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई जिससे उनका ईश्वर, बाइबिल और ईसाई धर्म पर से उनकी आस्था स्थिर न रह सकी। पादरी-पति और पत्नी का परस्पर निर्वाह कठिन हो गया और अन्ततोगत्वा १८७४ में सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। तलाक के पश्चात् एनी बेसेन्ट को गम्भीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा और उन्हें स्वतंत्र विचार सम्बन्धी लेख लिखकर धनोपार्जन करना पड़ा।

डॉ० बेसेन्ट इसी समय चार्ल्स वेडला के सम्पर्क में आईं। अब वह सन्देहवादी के स्थान पर ईश्वरवादी हो गईं। कानून की सहायता से उनके पति दोनों बच्चों को प्राप्त करने में सफल हो गये। इस घटना से उन्हें हार्दिक कष्ट हुआ। डॉ. बेसेन्ट ने ब्रिटेन के कानून की निंदा करते हुए कहा था की यह अत्यंत अमानवीय है जिसने बच्चों को उनकी माता से अलग करवा दिया। "मैं अपने दुखों का निवारण दूसरों के दुःख दूर कर के करुँगी और सभी अनाथ एवं असहाय बच्चों की माँ बनूँगी"। डॉ० बेसेन्ट ने अपने इस कथन को सत्य सिद्ध किया और अपना अधिकांश जीवन दीन-हीन अनाथों की सेवा में ही व्यतीत किया। ख्यातिलब्ध पत्रकार विलियड स्टीड के सम्पर्क में आने पर वे लेखन एवं प्रकाशन के कार्य में अधिक रुचि लेने लगीं। अपना अधिकांश समय मजदूरों, अकाल पीड़ितों तथा झुग्गी झोपड़ियों में रहने वालों को सुविधा दिलाने में व्यतीत किया। वह कई वर्षों तक इंग्लैण्ड की सर्वाधिक शक्तिशाली महिला ट्रेड यूनियन की सेक्रेटरी रहीं। वे

Scanned with CamScanner

अपने ज्ञान एवं शक्ति को सेवा के माध्यम से चारों ओर फैलाना नितान्त आवश्यक समझती थीं। उनका विचार था कि बिना स्वतंत्र विचारों के सत्य की खोज संभव नहीं है।

बौद्धिक रूप से विकसित पाश्चात्य देश की शिक्षित महिला का भारत आना, भारत को अपनी मातृभूमि के रूप में अपनाना तथा भारतीयों को भारतीयता का पाठ पढ़ाना विश्व इतिहास में एक अनोखी घटना है। पर सबसे आश्चर्य की बात डॉ० बेसेन्ट का भारत आगमन से वर्षों पूर्व भारतीय होना है। भारत के प्रति पहला वक्तव्य १८७५ में मिलता है, जिसमें उन्होंने भारतीय आत्मा की आवाज़ बनकर ब्रिटिश शासकों के भारत भ्रमण का विरोध भारतीय गरीबी के सन्दर्भ में किया। १८७८ में उन्होंने "इंग्लैंड, इंडिया तथा अफगानिस्तान" नमक पुस्तक में बहुत कठोर शब्दों में भारत में ब्रिटिश शासन की निंदा की है। यह पुस्तक ही वास्तव में भारतीय सांस्कृतिक जागरण एवं स्वतंत्रता संग्राम का प्रारम्भिक रूप है। उनके अनुसार जो ब्रिटिश द्वारा भारतीयों को सभ्य करने के सिद्धांत के समर्थक है, वे अज्ञानी है क्योंकि भारत उस समय विश्व सभ्यता का केंद्र था। उन्होंने ब्रिटिश शासन को "भारत का लुटेरा" कहा है। उन्होंने कहा की पूरे ब्रिटिश को "इस महान देश के प्रति किये गए गलत कार्यों के पश्चाताप के लिए एक मात्र उपाय भारत की स्वतंत्रता है। भारत को स्वतंत्रता के लिए तैयार करें और भारत में भारतीय न्यायाधीश ही न्याय करें एवं सर्वोच्च पद प्राप्त करें। यह भारत के तरफ से ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पहला विरोध था। यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम का पहला बिगुल था।

डॉ. बेसेन्ट १६ नवम्बर १८९३ को पहली बार भारत भूमि पर पदार्पित हुई। १८९५ में उन्होंने काशी में अपना निवास स्थान बनाया जिसका नाम "शांति-कुञ्ज रखा। वर्तमान में यह थियोसोफिकल सोसाइटी, लक्सा के परिसर में स्थित है। भारत के साथ डॉ. बेसेन्ट का तादात्म्य सिर्फ प्रेम तथा ज्ञान पर नहीं, भारत के प्रति त्याग एवं सेवा पर आधारित है। उन्होंने कहा था –"भारत को स्वतंत्रता मिल जाय, तो मेरे दुःखों का भी कोई मोल नहीं"। भारत के राष्ट्र निर्माण के लिए उन्होंने ४० वर्ष तक अथक परिश्रम किया। उन्होंने राष्ट्र निर्माण के सुक्ष्म तत्वों को भी खोज निकाला। उनके अनुसार एक राष्ट्र मनुष्य की तरह ही "एक जैविक और

Scanned with CamScanner

सामाजिक तत्व है"। एक राष्ट्र भी चार आधार स्तंभों पर आधारित है – आत्मा, विचार, भावना एवं शरीर। धर्म राष्ट्र की आत्मा है, शिक्षा राष्ट्र का विचार है, समाज राष्ट्र की भावना है एवं राजनीति राष्ट्र का शरीर। पूरे भारत के नव निर्माण के लिए उसके अंगो को विकसित करना था। डॉ. बेसेन्ट थियोसोफी से जुड़ने के बाद वे राजनीति से सन्यास ले चुकी थी। इसके पूर्व इंग्लैण्ड की राजनीति में उन्होंने सक्रिय सहभागिता निभाई। वे थियोसोफिकल सोसाइटी के इसोरेटिक (योग साधना) भाग का १८९१ में ही अध्यक्ष बन गई थी तथा १९०७ में पूर्ण सोसाइटी की भी अध्यक्षा बनीं।

डॉ. बेसेन्ट के राजनीति में आने के कई कारण थे। जिस भारत के लिए उन्होंने सर्वस्व दान दिया था वह भारत की परतंत्रता के कारण अधूरा रह जाता। ब्रिटिश सरकार की तानाशाही उनके हर प्रगतिशील कार्यों के सामने हिमालय बन कर खड़ी थी। जिस स्वंत्रता का बिगुल उन्होंने १८७८ में फूका था उसकी प्राप्ति का कोई ठोस कदम कोंग्रेस उठा नहीं पा रही थी। १९१४ में अपने ६८ वर्ष के उम्र में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। और इसके साथ ही "होमरूल" आन्दोलन प्रारम्भ किया। उन्होंने कांग्रेस और तिलक को साथ लेन का प्रयास किया। यह आन्दोलन भारतीय और कांग्रेस की राजनीति का नया जन्म माना जाता है। डॉ. बेसेन्ट पूरे देश में भ्रमण कर लोगों को स्वराज के प्रति जागृत किया तथा होमरूल की नई शाखाएं प्रारम्भ की। उन्होंने कार्यकर्ताओं को गाँव-गाँव भेजा और १९१५ में ही दो पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ करवाया –"न्यू इंडिया" दैनिक तथा "द कॉमन वील" साप्ताहिक। जिसके माध्यम से नवयुवकों में देश -प्रेम का ज़ज्बा भरने का प्रयास किया। इसके साथ ही महिलाएं भी प्रेरित होकर बड़ी संख्या में आन्दोलन में सहभागिता की। इन्ही की प्रेरणा से पहली बार किसानों में राजनीति जागरण आया। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लिखने के कारण इन्हें बीस हजार रूपये का दंड देना पड़ा।

अप्रैल,१९१६ में बोम्बे प्रोवेंसिअल कांफ्रेंस, बेलगाम में आयोजित की। इसके उपरांत डॉ. बेसेन्ट ने अपना लीग बना लिया तथा इन लीग ने अपने क्षेत्र निर्धारित कर लिए, जिसमें तिलक लीग महाराष्ट्र, कर्नाटक, सेंट्रल प्रोविंस तथा बरार सम्मिलित था। और शेष भारत डॉ. बेसेन्ट के क्षेत्र में था। उन्होंने अमेरिका तथा इंग्लैंड में भी होमरूल की शाखाएं प्रारम्भ की। जो भारत की स्वतंत्रता के

Scanned with CamScanner

लिए काम करते थे। लार्ड लेंसबरी तथा जी. बी. शॉ जैसे महान व्यक्तित्व के धनी इसके प्रमुख कार्यकर्ता थे। इन्होने कांग्रेस के गरम एवं नरम दल को मिलाया तथा मुस्लिम लीग और कांग्रेस को मिलाने का कार्य भी किया। १९१७ में डॉ. बेसेन्ट को उनके दो सहकर्मियों अरुन्डले तथा वाडिया के साथ नज़रबंद कर दिया गया। परिणाम स्वरुप सम्पूर्ण भारत में इसके विरोध में अनेक जुलुस निकाले गए तथा सभाएं की गई। न केवल भारत में बल्कि ब्रिटेन में भी इसका गंभीर विरोध हुआ। एक अन्य महत्वपूर्ण घटना घटी जो लोग अभी तक लीग से बाहर थे, उन्होंने होमेरुल लीग की सदस्यता ग्रहण की। उनमें मुख्यत: मदन मोहन मालवीय, सुरेन्द्र नाथ बेनेर्जिया और एम.ए. जिन्ना के नाम थे। और बेसेन्ट को स्वंत्रत करने के लिए एक हजार लोगों के हस्ताक्षर लिए गए। होमेरुल के लिए भी हजारों कृषक और मजदूरों के भी हस्ताक्षर लिए गए। अंततः ब्रिटिश पार्लियामेंट को झुकना पड़ा और उन्हें तीन माह दिसम्बर, १९२७ में ही छोड़ना पड़ा। साथ ही उन सुधारों की भी घोषणा करनी पड़ी जिसके लिए कांग्रेस बहुत समय से प्रयासरत्न था। १९१८ में जहाँ होमेरुल लीग को गति पकड़नी थी, इसके विपरीत धीरे- धीरे भंग हो गई। होमेरुल लीग एक ऐसी कड़ी थी जो नगरों और देशों को जोड़ने का कार्य कर रही थी, नए आंदोलनों के मध्य गुम हो गई।

डॉ. एनी बेसेंट का देहावसान २० सितम्बर, १९३३ में अड्यार, मद्रास में हुआ। वो चाहती ही उनकी मृत्यु के पश्चात सहयोगियों जिद्दू कृष्णमूर्ति, एल्डस हक्सले, गुइड, फेरांडो और रोजालिंड राजगोपाल ने कैलिफोर्निया में हैप्पी वैली स्कूल का निर्माण किया, जिसे बाद में हैप्पी वैली बेसेन्ट हिल स्कूल नाम दिया गया।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि डॉ. बेसेन्ट का सहयोग, सेवा त्याग, प्रेम तथा समर्पण की भावनाएं अपरिमित है। किन्तु उनके व्यक्तित्व का वास्तविक अनुभव तभी हो सकता है जब हम उनके जीवन एवं दर्शन के गहरे तक उतरते है। डॉ. एनी बेसेंट की पहचान स्वतंत्रता सेनानी के साथ ही आधुनिक भारत की माँ एवं मार्गदर्शिका के रूप में की जाती है। भारत के अनेक स्वतंत्रता सेनानी ने उनके प्रति अपना आभार प्रस्तुत किया है -

Scanned with CamScanner

महात्मा गाँधी ने कहा कि –

"भारत को निद्रा से जगाने का कार्य श्रीमती बेसेंट ने किया तथा जब तक भारत जीवित है तब तक उनकी महँ सेवाएँ भी जीवित रहेंगी"।

सरोजिनी नायडू :

"Mrs. Besant was a combination of Parwati, Lakshmi, and Saraswati....she was more truely Indian to all of us and laid foundation of modern India ...source of inspiratiob to me. I learned my first lesson in patriotism from lips of Mrs. Besant, a great mother of Indian People."

स्वामी विवेकानंद :

"Mrs. Besent is an sincere well-wisher of our Motherland and is doing the best to raise our country eternal gratitude of every trueborn Indian is hers forever."

डॉ. एनी बेसेंट एक ऐसी व्यक्तित्व थी, जिन्होंने भारत को न केवल अपनी कर्मभूमि बनाई बल्कि यहाँ के लोगों के लिए एक आदर्श का परिचायक भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Chandra, B., Mukharjee, M., Mukharjee, A., Mahajan S., and K.N. Panikkar,(Eds.) 2016. *India's Struggle for Independence* . Penguins Random House. India. First print 1988.

2. Besant, Annie. 1983. *Annie Besant: An Autobiography*. The theosophical Publishing House Adyar Madras, India

Scanned with CamScanner

3. Kaur, Manmohan. "Mrs. Annie Besant and the Home Rule Agitation (1914-1918). In *Role of Women in the Freedom Movement (1857-1947),* 117-43. Jullundur: Sterling Publisher, 1968

4. Forbes, Geraldine. *Women in Modern India*. Vol. 4.2, *The New Cambridge History of India,* edited by Gordon Johnson, C.A. Bayly, and John F. Richards. Reprint. Cambridge: Cambridge University Press, 1996.

5. Chatterjee, Manini. "1930: Turning Point in the Participation of Women in the Freedom Struggle." *Social Scientist* 29, no.7/8 (July-August 2001):39-47. Accessed January 23, 2014. http://www.jstor.org/stable/3518124.

6. Andrews, C.F. and Girija K. Mookerjee. *The Rise and Growth of Congress in India: (1832-1920)*. Meerut: Meenakshi Prakashan, 1967.

Scanned with CamScanner